गुरुमाई चिद्विलासानन्द पर मनन, वर्ष २०१६

बोज़ेना पामक्विस्ट

द्वारा लिखित

नामसंकीर्तन का अनमोल उपहार

सन् १९९६ में, जब मैंने सुना कि श्री गुरुमाई अपनी महायात्रा के दौरान पोलॅन्ड आ रही हैं, तो मेरे आश्चर्य और खुशी की कोई सीमा न रही। सात माह की इस महायात्रा के दौरान श्री गुरुमाई विश्व के कई स्थानों पर रुकने वाली थीं। मैंने एक वर्ष पहले ही सिद्धयोग पथ का अनुसरण करना आरम्भ किया था; और पोलॅन्ड के सिद्धयोगियों के सद्भाग्य को देखकर मैं अत्यन्त आनन्द महसूस कर रही थी।

तुरन्त ही, मैं उस टीम में शामिल हो गई जो श्री गुरुमाई की यात्रा की तैयारी हेतु सेवा अर्पित कर रही थी; और जिस दिन गुरुमाई जी आईं मैं लॉड्ज़ में थी। यात्रा के प्रबन्धकों ने हमें बताया कि सम्भव है कि श्री गुरुमाई अगले दिन श्रीगुरुगीता के पाठ के लिए हॉल में आएँ। अगली सुबह बादल छाए हुए थे और ठण्ड थी, पर जैसे ही श्री गुरुमाई ने हॉल में प्रवेश किया तो ऐसा लगा जैसे एक देदीप्यमान सूर्य ने अपने प्रकाश व स्नेह से विश्व को प्रकाशित कर दिया हो।

जब हमने श्रीगुरुगीता का पाठ आरम्भ किया तो मैं एक बच्चे के समान उत्सुक और खुश थी; मेरा मन काफ़ी बेचैन था। परन्तु जैसे ही मैंने, श्री गुरुमाई के गहरे व स्पष्ट स्वर में गाए हुए पवित्र श्लोकों के पठन पर अपना ध्यान केन्द्रित किया तो मेरा मन तुरन्त शान्त हो गया और मैं सुमधुर आह्लाद की सौम्य तरंगें अनुभव करने लगी।

अपनी पोलॅन्ड की यात्रा के दौरान गुरुमाई जी हर दिन, संघम् के साथ श्रीगुरुगीता का पाठ करती थीं। जब अधिकाधिक सिद्धयोगी और नए जिज्ञासु, रूस, लिथुएनिया व क्रोएशिया से, और फिर विश्वभर से वहाँ आने लगे, तो हमने अपना स्थान बदल दिया और हम सेन्ट्रल होटल से, विएल्की ऑपरा हाउस में चले गए जो कि एक विशाल और सुन्दर जगह थी।

एक दिन मुझे श्रीगुरुगीता के पाठ की संगीत मण्डली में शामिल होने के लिए आमन्त्रित किया गया। मैं मंच पर, श्री गुरुमाई के बहुत निकट बैठी हुई थी। पाठ के बाद, जब हम 'श्री कृष्ण गोविन्द, हरे मुरारे' का नामसंकीर्तन कर रहे थे तब मुझे हर्ष व प्रेम से परिपूर्ण एक प्रबल स्पन्दनशील शक्ति का एहसास हुआ।

ऐसा लग रहा था मानो यह शक्ति, ध्वनि के माध्यम से श्री गुरुमाई से प्रसरित हो रही हो। मेरा मन स्थिर हो गया और मैंने अनुभव किया कि मेरा हृदय खुल रहा है। मैंने चारों ओर देखा तो मुझे हर व्यक्ति व हर वस्तु के लिए अहैतुकी प्रेम का अनुभव हो रहा था। मैं समझ गई कि यह अनुभव, श्री गुरुमाई की कृपा और स्वयं नामसंकीर्तन की शक्ति का उपहार है।

यात्रा की समाप्ति पर, जब श्री गुरुमाई का पोलॅन्ड से प्रस्थान हुआ तब मैं पोज़नान स्थित अपने घर लौट गई। घर पर मैं अक़्सर स्वयं के साथ सत्संग किया करती: सिद्धयोग मन्त्र, श्रीगुरुगीता और विभिन्न नामसंकीर्तनों की सी.डी. के साथ नामसंकीर्तन करती। जब भी मैं ऐसा करती तब मैं श्री गुरुमाई का मानस-चित्रण करती, वैसे ही जैसे वे लॉड्ज़ में थीं। मैं श्री गुरुमाई की आवाज़ पर ध्यान केन्द्रित करती और अपने अन्तर की गहराई में उनकी आवाज़ को गूँजने देती; और फिर अपनी आवाज़ को उनकी आवाज़ में मिलाने का प्रयत्न करती।

उन अवसरों पर कुछ आश्चर्यजनक घटता। मुझे महसूस होता कि शक्ति मेरे अन्तर में ऊपर उठ रही है और नृत्य कर रही है। यदि मुझे कोई चिन्ताएँ या परेशानियाँ होतीं तो वे लुप्त हो जातीं। मेरी सम्पूर्ण सत्ता में आनन्द की तरंगें बहने लगतीं।

मुझे यह समझ में आने लगा कि नामसंकीर्तन करते हुए मेरे अन्तर से उभरने वाला प्रेम व आनन्द, मेरी अपनी आत्मा का अमृत है, कुण्डलिनी शक्ति का उल्लास है। श्री गुरुमाई की पोलॅन्ड की यात्रा के बाद, इन बीस वर्षों में मेरी बाह्य परिस्थितियों में कई बदलाव आए हैं।

इस तरह, स्वयं के साथ सत्संग करते-करते, ऐसा समय आया जब मेरे घर पर सिद्धयोग संकीर्तन व ध्यान समूह के सत्संग होने लगे।. तत्पश्चात्, मैं पोलॅन्ड के अन्य स्थानों पर और यूरोप के विभिन्न भागों में सिद्धयोग शिक्षण एवं अध्ययन कार्यक्रमों में भाग लेने लगी। मैंने अमरीका में रहने वाले एक सिद्धयोगी से विवाह किया और मैं ऑरेगन आ गई।

जीवन के इन सभी परिवर्तनों के दौरान, मैंने नामसंकीर्तन के प्रति अपने प्रेम को अपना साथी बनाए रखा है। मैं जब सी.डी. के साथ अकेले नामसंकीर्तन करती हूँ और जब दूसरों के साथ नामसंकीर्तन करती हूँ, तब मैं नामसंकीर्तन के विषय पर गुरुमाई जी की सिखावनियों का अभ्यास करती हूँ, जैसे आसन, एकाग्रता, श्रवण और अपनी आवाज़ को दूसरों की आवाज़ के साथ मिलाना। जब मैं ऐसा करती हूँ तो पाती हूँ कि अन्तर का आनन्द फिर से उमड़ने लगता है और मैं उसी प्रेम को महसूस करती हूँ जिसे मैंने पोलॅन्ड में गुरुमाई जी के साथ होते हुए पहली बार अनुभव किया था।

अब, अपने दैनिक क्रियाकलाप करते समय, जब मैं अपने मन व हृदय की उस अवस्था को याद करती हूँ जिसका अनुभव मुझे नामसंकीर्तन के दौरान होता है, तो सब कुछ बड़ी ही सहजता से होता है। कभी-कभी लोग मुझसे पूछते हैं कि आप अपने जीवन में इतने सारे परिवर्तनों से कैसे गुज़र पाइ,-जैसे दूसरे देश में आकर रहना, अपने परिवार से दूर रहना, विदेशी समाज में अपने लिए स्थान बनाना?

मैं मुस्कराते हुए सोचती हूँ, "जब मैं नामसंकीर्तन के सरल-सुगम अभ्यास द्वारा अपनी आत्मा का, अपने ही हृदय के प्रेम का अनुभव कर सकती हूँ तो मुझे अकेलापन कैसे महसूस हो सकता है?" मुझे लगता है कि मैं कभी अकेली हूँ ही नहीं। जो मैं उन्हें बताती हूँ वह है, "मैं नामसंकीर्तन करती आई हूँ। नामसंकीर्तन ने मेरा जीवन रूपान्तरित कर दिया है। यह मुझे प्रेम और आनन्द से भर देता है और मुझे शान्ति प्रदान करता है।" मन ही मन मैं श्री गुरुमाई के प्रति कृतज्ञता से नतमस्तक होती हूँ, कि उन्होंने इन सभी शक्तिपूरित नामसंकीर्तनों को सिद्धयोग परम्परा में शामिल किया है और इन्हें संरक्षित रखा है। नामसंकीर्तन पर उनकी सिखावनियों के लिए मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ; और इन सबसे बढ़कर उनकी कृपा के लिए।

©२०१६ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउण्डेशन® ।सर्वाधिकार सुरक्षित।